JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत में नारी : अतीत व वर्तमान

डॉ0 तेज प्रताप सिंह
असिस्टेन्ट प्रोफेसर (समाजशास्त्र विभाग)
राष्ट्रीय पी0जी0 कालेज जमुहाई, जौनपुर।

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में महिलाओं का स्थान उच्च रहा है। ''पुरूष और स्त्री समाज निर्माण के दो महत्वपूर्ण स्तम्भ है, देखा जाये तो भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति जटिल और विविध है जिसमें सुधार भी हुए हैं और चुनौतियां भी बनी हुई हैं। इसीलिए विभिन्न युगों में भारतीय स्त्री की स्थिति क्या रही है, मानवीय विकास में इसका योगदान कितना और कैसा रहा, कहाँ आकर सन्तुलन बिगड़ा, इस असन्तुलन ने समाज को, पुरूष को एवं स्वयं नारी को कितनी क्षति पहुँचाई–इसका अध्ययन सदियों से विद्वानों की रूचि का विषय रहा है।''

शब्द कुंजीः– महिला सामाजिक, आर्थिक, विकास, परम्परा, आवश्यकता

प्रस्तावनाः–

प्राचीन भारत में नारी

प्राचीन भारतीय समाज में स्त्रियों को अत्यन्त गौरवशाली स्थान प्राप्त था। प्राचीन भारत ने नारी के सच्चे एवं गरिमा मंडित रूप के दर्शन किये एवं समाज में इसे समुचित स्थान प्रदान किया। स्त्री व पुरूष को जीवनरूपी गाड़ी के दो पहिये मानकर दोनो को समान अधिकार दिया था। इसलिए स्त्री को पुरूष की अर्धांगिनी कहा गया था। शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि–''पत्नी पुरूष की आत्मा का आधा भाग है, इसलिए जब तक मनुष्य स्त्री को प्राप्त नहीं कर लेता तब तक प्रजोत्पादन न होने से वह अपूर्ण रहता है।'' महाभारत में आदिपर्व में लिखा है कि भार्या मनुष्य का आधा भाग है, भार्या श्रेष्ठ सखी है, भार्या ही धर्म, अर्थ, काम की मूल है–

अर्द्ध भार्या मनुष्यस्य भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

भार्या मूलं त्रिवर्गस्य भार्या मूलं तरिष्यतः।।[1]

प्राचीन भारत में विवाह के पश्चात स्त्री पुरूष का पारिवारिक जीवन में समान अधिकार रहता था। स्त्री का कार्यक्षेत्र परिवार तक ही सीमित न रहकर समाज से सम्बद्ध था। गृहिणी रूप के अतिरिक्त प्राचीन काल में नारी का दूसरा महिमामय रूप माता का था। माता के अतिरिक्त नारी का सहचरी रूप भी अति महत्वपूर्ण माना गया था। परिवार के अन्तर्बाह्य उत्तरदायित्वों का वहन करते उसका और उसके पति का जीवन नीरस न हो जाए, इसलिए वह पति की सहचरी बनकर जीवन के सुखों का उपभोग करती थी।

यदि हम ऋग्वेद की बात करें तो ऋग्वेद के अन्दर लोपमुद्रा नामक महिला का वर्णन आता है। यह विदर्भ की राजकुमारी थी। लोपमुद्रा को उनके पिता ने बहुत पढ़ाया, लिखाया तथा विद्वान बनाया एवं सभी शास्त्रों का ज्ञान दिया। इन्होंने अपनी मर्जी से ऋषि अगस्त्य से विवाह किया। क्या ऐसी महिला जो पिता तथा पति दोनो के साथ अपनी मर्जी से रही तथा पढ़ी लिखी एवं विवाह किया, दबी कुचली कहलाई जायेगी?

''प्राचीन काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिया जाता था तथा उनके पढ़ने, लिखने, बाहर जाने या विवाह करने पर कोई रोक–टोक नहीं थी।''

इसी तरह से मैत्रेयी, गार्गी व घोषा का वर्णन वेदों में है, जिन्होंने ना सिर्फ शास्त्रों, संस्कृत एवं अन्य ज्ञान प्राप्त किये बल्कि यह शास्त्रार्थ की कला में भी पूरी तरह निपुण थी।[2]

''वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति बहुत ऊँची थी और भारतीयों के सभी आदर्श स्त्री पुरूष में पाये जाते थे। विद्या का आदर्श 'सरस्वती' में धन का आदर्श 'लक्ष्मी; में, शक्ति का आदर्श 'दुर्गा' में सौन्दर्य का आदर्श 'रति' में पवित्रता का आदर्श 'गंगा' में इतना ही सर्वव्यापी ईश्वर को भी 'जगतजननी'' के नाम से सुशोभित किया गया है। नारी में समस्त देवताओं की सम्मिलित शक्ति के तुल्य बल है। इस युग में चाहे घर या परिवार हर जगह नारी की सिथति बहुत अच्छी थी। शिक्षा में वह बहुत आगे थी।''

वैदिक काल में सर्वाधिक प्रशंसनीय स्थिति माता–पिता की सहमति से होने वाला विवाह था इसलिए पति–पत्नी को मिलकर रहने की वेदमंत्रों में कामना की है। वधु को सौभाग्यशाली एवं पुत्रवती

होने का आशीर्वाद दिया जाता था। सूर्या विवाह सूक्त में पति–पत्नी को एक माना गया है–'वधु अपने कर्म से तुम सास–ससुर, ननद और देवरों की रानी बनो और सबके ऊपर प्रभुत्व प्राप्त करो''–

सामग्री श्वसुरे भव सामाग्री श्वश्रूवाँ भव।

ननान्दरि समाज्ञी भव समाज्ञी अधिदेवेषु।।[3]

वैदिक काल में नारी उच्च आदर्शों वाली, पति की सहयोगिनी और महान थी। आशय यह है कि प्राचीन काल में नारियों की स्थिति सम्माननीय थी।

मध्य काल में नारीः–

मध्य युग में डांवाडोल राजनैतिक स्थिति का प्रभाव देश की सामाजिक, आर्थिक स्थितियों पर पड़ा। लगातार विदेशी आक्रमणों एवं भिन्न सांस्कृतिक परिवेश के साथ भारत में इस्लाम के आक्रमण ने पहले संघर्ष फिर सांस्कृतिक परिवर्तन के लिए जमीन तैयार की। स्त्रियों की स्थिति में भी परिवर्तन आया मुसलमानों के वर्चस्व का जितना असर पुरूषों की स्थिति पर दिखाई देता है स्त्रियों की अधीनस्थ की भूमिका ने उसे क्रमशः अवनति की ओर अग्रसर किया। इस युग के आते ही स्त्री के दिव्य गुण धीरे–धीरे उसके अवगुण बनने लगे। साम्राज्ञी से वह धीरे–धीरे आश्रिता बन गयी, जो स्त्रियाँ वैदिक युग में धर्म और समाज का प्राण थी, उन्हें श्रुति का पाठ करने के अयोग्य घोषित किया गया। वैदिक युग का दृष्टिकोण स्त्री के प्रति दिव्य परिकल्पनाओं तथा पुनीत भावनाओं से परिवेष्टित था, जो धीरे–धीरे पूर्णतयाः बदल चुका था, यह युग तो जैसे स्त्रियों की गिरावट का युग था।

''उनके मानसिक तथा आत्मिक विकास के द्वारों पर ताले लगा दिये गये। उनकी साहित्यिक उन्नति के मार्ग पर अनेको प्रतिबन्ध लगा दिये गये। 'स्त्री शूद्रों नाधीताम्' जैसे वाक्य रचकर उसे शूद्र की कोटि में रख दिया गया।'' स्त्री को विवाह संस्कार के अतिरिक्त सभी संस्कारों से वंचित कर दिया गया। सनातन, वैदिक काल के उच्च, सुदृढ़ आदर्शों की इमारत ढह चुकी थी। फिर पुरूष ने स्त्री को अपने भोग की वस्तु बना लिया था। वह पशु के तुल्य पराधीन हो चुकी थी। हिन्दी के प्रसिद्ध कवि श्रीरामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास ने कहा है, ''ढ़ोल, गंवार, शूद्र, पशु, नारी ये सब ताड़न के अधिकारी'' तो दूसरे भक्त कवि कबीर ने तो नारी की परछाई से बचने का उपदेश दिया है, ''नारी की झाई अंध परत अंधा होत भुजुंग कबीरा, तिनकी का गति जो नित नारी के संग।''[4] इस

काल में धीरे–धीरे बाल–विवाह, पर्दे की बेड़ियाँ बनने लगे। स्वेच्छाचारिता तथा अमानुषिकता की पराकाष्ठा हो गई थी, क्योंकि आत्मज्ञान में भ्रमित पुरूषों ने उसे मोक्षमार्ग की मुख्य बाधा माना। सभ्य पुरूषों ने स्त्री की चर्चा करना वैषयिकता का लक्षण माना और विरक्तों ने उसका मुखावलोकन करना निषिद्ध माना/विलासियों और कवियों ने उसे विलास की वस्तु समझा।

मध्यकालीन काव्य में मीरा को छोड़कर अन्य भक्त एवं सन्तो ने नारी की सार्थकता पुरूष वर्चस्ववादी ढ़ाचे में ही सुरक्षित की है। मध्यकालीन नारी कुसंस्कारों में पली हुई, परम्परा के बन्धनों में सीमाबद्ध, अशिक्षित, दृष्टिबिन्दु, गृह की शूद्र सीमा में ही सीमित रहा है। इतिहास और साहित्य में इसके अपवाद भी हैं, पर जन सामान्य में नारी निश्चित सीमाओं, आदर्शों, रेखाओं पर इच्छा तथा अनिच्छा से चली है उसके अशिक्षित मस्तिष्क कुसंस्कारों से पूर्ण हृदय पर नियामकों ने आदर्श का भार लादने का प्रयास किया है। बौद्धिकता तथा तर्क–वितर्क की भावना रहित नारी के सरल हृदय ने इन आदर्शों को अपने जीवन पथ का ध्रुव तारा समझा। इन आदर्शों, एकपक्षीय पवित्रता तथा पतिव्रत को उसने सदा ही शिरोधार्य किया है। इन आदर्शों की उपलब्धि के प्रयास में उसे विस्मृत हो गया कि उसके पद श्रृंखलाबद्ध हैं, अतः वह पतित भी हुई। फलतः मध्य युग में नारी पुरूष के इंगित पर नृत्य करने वाली पुतली मात्र रह गयी। उसमें चेतना तथा व्यक्तित्व का अभाव रहा। भक्तिकाल में नारी के भौतिक और आध्यात्मिक दोनो प्रकार के सौन्दर्य का निरूपण किया गया है।

''नारी सौन्दर्य की उदात्तता, उसके तीनो रूपों, माता, पत्नी और कन्या में भक्तिकाल के कवियों ने अंकित की है। ज्ञान मार्गियों के लिए माता परमात्मा स्वरूप भी है अथवा कहना चाहिए कि उन्होंने माता में परमात्मा की विशेष स्थापना देखी है'' सामन्ती समाज व्यवस्था ने स्त्री को सिर्फ तीन पत्नी, रखैल और वेश्या तथा उसे सिर्फ दो रूपों में देखा है–देवी तथा दासी। मीरा ने स्त्री के इन सब परम्परागत रूपों को अस्वीकार किया है। आज स्त्री–विमर्श के बुलंद नारे के बीच मीरा का व्यक्तित्व एवं उनका काव्य किस प्रकार प्रासंगिक है। यह विचारणीय है।

''सूरदास ने माता यशोदा के मक्खन समान स्नेह, आत्म–त्याग, निःस्पृह वात्सल्य का जो चित्रण किया है, वह मधुरता के साथ उदात्त है'' वही तुलसीदास ने ''माता को परमाभिवंधा कहा है, जिसका स्थान पिता की अपेक्षा अत्युच्च है'' नारी हृदय कोमलता, दया, सहानुभूति और स्नेह की सजीव प्रतिमा है। कार्यों, रूपों और स्थितियों के अनुसार, नारी के अनेक नाम भारतीय साहित्य में प्रचलित है। जिससे नारी के विभिन्न रूपों का बोध होता है। ''नर के धर्म वाली या नर से सम्बन्धी होने के कारण

उसका नाम नारी पड़ा। इस शब्द से सृष्टि के एक–एक प्राणी विशेष का रूप सामने आता है। यह भक्तिकाल में प्रायः उसी अर्थ में प्रयुक्त होता था, जिस अर्थ में आजकल साधारणतयाः 'मादा' शब्द का प्रयोग होता है।''

मध्य काल में कन्या जन्म के अशुभ माने जाने के संकेत मिलते हैं। सदैव लड़कियां पैदा करने वाली स्त्रियों को घृणा से देखा जाता था। स्त्री को कुछ सम्मान पुत्र की माता बनने पर मिलता था। परन्तु इस्लाम के भारत में आने के बाद सुरक्षा, विवाह, दहेज आदि प्रश्नों ने कन्या जन्म को सामाजिक अप्रतिष्ठा के प्रश्न ने कन्या शिशु हत्या के आँकड़ों में वृद्धि की। 'अमीर खुसरो' इसलिए कहते हैं–''मै चाहता था कि तुम्हारा जन्म ही नहीं होता और यदि होता भी तो पुत्र के रूप में। कोई भाग्य का विधान नहीं बदल सकता परन्तु मेरे पिता ने एक स्त्री से जन्म लिया और मुझे भी तो एक स्त्री ने ही पैदा किया था।''

मध्यकालीन भारत में स्त्री शिक्षा के बारे में जानकारी अपर्याप्त है। यद्यपि इब्नतूता लिखते हैं कि–जब वह हनौर पहुँचा तो वहाँ उसने 23 ऐसे विद्यालय देखे जिनमें बालिकायें शिक्षा ग्रहण करती थी। नगरों व बड़े घरानों की स्त्रियां के पढ़ने–लिखने के संकेत मिलते हैं, किन्तु सामान्य परिवारों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा का स्तर नीचा था।''

''भक्तिकालीन साहित्य में मीराबाई, गबरीबाई, दयाबाई, सहजोबाई का योगदान'' एवं ''पातुरो द्वारा लिया गया साहित्य'' द्वारा स्त्रियों में शिक्षा के प्रसार के बारे में जानकारी मिलती है। ''11वीं शताब्दी के प्रारम्भ में ही भारतीय समाज पर उसके आपसी मतभेद एवं फूट के कारण मुस्लिमों का आधिपत्य हो गया था। उनके प्रतिदिन के बढ़े वर्चस्व के कारण संस्कृति रक्षा एवं मनुस्मृति के नाम पर नारी के स्वतंत्र अस्तित्व का न केवल पूर्णतयाः लोप होने गया वरन् उन्हें समाज की चारदीवारों में कैद कर सजा दिया गया। लगातार आक्रमणों में भागीदारी, परिवार एवं समाज को सुरक्षा प्रदान करते रहने के कारण पुरूषों का गौरव बढ़ता चला गया।''

धीरे–धीरे स्थिति यह आयी कि सुविधा एवं सुरक्षा जुझटते रहने के कारण पुरूषों के वर्चस्व को समाज में मान्यता दे दी गयी। उनका कार्य केवल सज–संवरकर पुरूषों की इच्छापूर्ति करना अथवा उनके बच्चों की माँ बनकर उनकी देख–रेख करना रह गया। वे बाजार की एक बेजान वस्तु की भाँति हो गई जिनकी हर साँस पर दूसरों का अधिकार था।

आधुनिक काल में नारी

इस आधुनिक युग में हमारा समाज एक पुरूष प्रधान समाज है। आज भी नारी चाहे कितनी भी आगे क्यों न बढ़ जाएं, पर नारी और पुरूष में आज भी लैंगिक समानता पर्याप्त है। लैंगिक समानता आज भी हमारे समाज का मुख्य मुद्दा है। जहां आज 21वीं शताब्दी में भी महिलाएं कई उपलब्धियां प्राप्त करने के बाद भी, इस पुरूषवादी प्रभुत्व देश में पिछड़ी जा रही है। हमारा समाज आज भी कितना ही आगे क्यों न बढ़ जाए, किन्तु अभी महिलाओं को समान समानता पाने के लिए अभी और प्रयास करने होंगे।

देखा जा सकता है कि जिस प्रकार एक रथ को सुचारूप से चलाने के लिए एक पहिये की आवश्यकता पड़ती है, उसी प्रकार एक घर या समाज को सही ढंग से चलाने के लिए एक सशक्त नारी की आवश्यकता पड़ती है। आज के समाज में हमें नारी को उचित सम्मान देना होगा, उन्हें उनकी जिन्दगी को सही ढंग से जीने की आजादी देनी होगी, उन्हें बाहर आने–जाने की, काम करने की और आधुनिक परिवेश में सही ढंग से ढ़लने की स्वतंत्रता देनी होगी, तब वह अपने समाज को और आगे ले जा पायेगी।[5]

आधुनिक युग में महिला की दशाः–

आज के इस बदलते परिवेश में नारी की दशा में चाहे किसी भी क्षेत्र में हो, वह अपनी अलग पहचान बना चुकी है, जिससे वह अपनी जिन्दगी के सही फैसले ले सके और समाज में उन्हें अपने ढंग से प्रस्तुत कर सके। साधारण शब्दों में अगर हम बोले तो उन्हें साक्षर बनाना ही महिला सशक्तिकरण है और साथ ही साथ उनकी दशा में सुधार करना, जिससे वह आसमान छू सकें और बुलंदियों को पा सके और विश्व में देश का नाम रोशन कर सके। उदाहरण– राजनीतिक क्षेत्र में देश की पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इन्दिरा गांधी जो आज भी एक चमकते सूरज की तरह हमें चमकाती है। भारत की पहली महिला आई0पी0एस0 किरण बेदी।विज्ञान के क्षेत्र में कल्पना चावला, सुनीता विलियम्स आदि जो अन्तरिक्ष की ऊंचाइयों तक पहुँच चुकी है।

कला और अभिनय के क्षेत्र में रेखा, माधुरी दीक्षित और दीपिका पादुकोण, तो विश्व सुन्दरी ऐश्वर्या राय और प्रियंका चोपड़ा, सुष्मिता सेन ने अभिनय के साथ विश्व में अपना लोहा मनवाया, जबकि गायकी के क्षेत्र में स्वर साम्राज्ञी लता मंगेशकर और आशा भोसले की आवाज को लोग अभी भी पसन्द करते

हैं। अगर बात करें खेल की तो पीटी उषा, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल, दंगल गर्ल गीता फोगाट, मैरी काम, साक्षी मलिक आदि अन्य कई महिलाएं ऐसी हैं, जिन्होंने पूरी सुविधा नहीं होते हुए भी अपने प्रयासों के द्वारा उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर उपलब्धि हासिल की है तथा अपनी अलग पहचान बनाई है। अभी हाल में ही **विश्व चैम्पियन पीवी सिंधु** ने देश का जो नाम रोशन किया है, उसे कौन भूल सकता है।[6]

भारतीय महिला के तेजी से बढ़ते कदम

वर्तमान में इंडियन वूमन अर्थात् भारतीय महिला, इस शब्द को सुनते ही हर एक नागरिक के मन में एक ही छवि आती है कि भारतीय महिला एक साधारण छवि वाली सीधी–सादी घरेलू महिला जो कि अच्छी बेटी, बहन, पत्नी या माँ इत्यादि, लेकिन स्वतंत्रता के 70 साल बाद भी हम महिलाओं को सामान्यतः इसी रूप में देखते हैं। फिर भी इस बात में कोई सन्देह नही है कि इतने सालों में भारत में महिला वर्ग में बड़ी तेजी से परिवर्तन हो रहा है।

आजादी के 70 सालों के पहले की तुलना में 1947 में महिलाएं पहले घर में रहकर चूल्हा–चौका करती थी, उन्हें पढ़ने–लिखनें और खेलने की अनुमति नहीं थी। वहीं आज 2018 में भारतीय संविधान में महिला और पुरूष को समान अधिकार प्रदान किये गये हैं किन्तु निरक्षरता एवं घरेलू रूढ़िवादी के कारण महिलाएं उन सब अधिकारों का उपयोग नहीं कर पा रही है।

आज भारतीय नारी ने हर क्षेत्र में सफलता हासिल की है। अगर हम शिक्षा की बात करें तो पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं की शिक्षा का स्तर ज्यादा है, लेकिन अगर शिक्षित नारी की तुलना शिक्षित पुरूषों से करें, तो छात्राओं ने बाजी मारी है, वो चाहे आईआईटी, एमबीए, मेडिकल हो, सभी में छात्राओं ने प्रथम स्थान हासिल किया है। जैसे–कला के क्षेत्र में ऐश्वर्या राय 'अभिनेत्री' ने अपना नाम इतिहास के स्वर्णिम अक्षरों में अंकित किया है और हाल ही में हमारी हरियाणा की विश्व सुन्दरी 2017 मानुषी छिल्लर ने यह साबित किया है।[7] आज अगर भारतीय नारी आगे बढ़ने के प्रयास में हर क्षेत्र में कार्यरत है तो इससे उन्होंने न सिर्फ भारत बल्कि विश्व में सम्मान पाया है, जो अभी हाल ही में ऑस्ट्रेलिया (ग्लोस्गो) में अन्तर्राष्ट्रीय ओलम्पिक 2018 में 26 स्वर्ण जिसमें से 10 स्वर्ण पदक महिलाओं ने जीतकर देश का नाम रोशन किया है। 2023 में 1.3 मिलियन से अधिक युवा महिलाओं व लड़कियों ने भाग लिया है। 2025 मई में सोफिया कुरैशी व व्योमिका सिंह ने आपरेशन सिंदूर अभियान के सैन्य ठिकानों को ध्वस्त किया।

निष्कर्ष

सदियों से नारी को एक वस्तु तथा पुरूष की सम्पत्ति समझा जाता रहा है। पुरूष नारी को पीट सकता है, उसके दिल और शरीर के साथ खेल सकता है, उसके मनोबल को तोड़कर रख सकता है, साथ ही उसकी जान भी ले सकता है। मानो कि उसे नारी के साथ यह सब करने का अघोषित अधिकार मिला हुआ है। मगर यह सच है कि अनेक नारियों ने हर प्रकार की विपरीत और कठिन परिस्थतियों का डटकर सामना करते हुए उनपर विजय प्राप्त की और इतिहास में अपना नाम अमर कर दिया। आज की बदली हुई तथा अपेक्षतया अनुकूल परिस्थितियों में नारियां स्वयं को बदलने और पुरूष–प्रधान समाज द्वारा रचित बेड़ियों से स्वयं को आजाद करवाने हेतु कृत संकल्प हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अनुराधा पाण्डेय, 'महिला सशक्तिकरण', इशिका पब्लिशिंग हाउस, जयपुर 2010 पृ0 25,26
2. प्रज्ञा शर्मा, 'महिलाओं के प्रति अपराध' पोइन्टर पब्लिशर्स जयपुर, प्रथम संस्करण, 2006 पृ0–11
3. बसंत कुमार राय, 'नारीः अर्धांग से अनुगामिनी तक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में', भारतीय राजनीति विज्ञान शोध पत्रिका (प्रथम प्रवेशांक), जनवरी–जून 2009, पृ0 205
4. अग्रवाल प्रेमनारायण, सम्पादन, जगदीश्वर चतुर्वेदी, पृ0सं0–23–24, अनामिका पब्लिशर्स एण्ड डिपो, नई दिल्ली पृ0–28
5. स्त्रीः भारतीय एवं पाश्चात्य अवधारणा, डॉ0 मधु देवी अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका शोध, समीक्षा और मूल्यांकन, पृ0सं0–74
6. शर्मा, गजानन, प्राचीन भारतीय साहित्य में नारी पृ0सं0 42–43, रचना प्रकाशन, 45ए, खुल्दाबाद, इलाहाबाद पृ0–26
7. कस्ववार, रेखा, स्त्री चिन्तन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2006 पृ0सं0 64